हमारे लिये परमेश्वर के स्तर

प्रत्येक रिश्ते और प्रत्येक परिस्थिती में हमें परमेश्वर के वचनों के पालन के द्वारा मसीह के चरित्रों को दर्शाना है।

मुझे क्या करना है ?

मसीह का शिष्य होने के नाते मैं :

१. चाहे मुझे कैसा भी महसूस हो मैं प्रेमपूर्वक उसके वचनों को मानकर पूरे हृदय, मन, आत्मा और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करूँगा/करूँगी (१शमुएल १५:२२–२३, मत्ती २२:३७–४०, यूहन्ना १४:१५, गलातियों ५:१६–१७, १यूहन्ना ५:३ पर आधारित),

२. सिर्फ प्रभु की ही आराधना करूँगा (व्य.वि.६:१३, भजन संहिता २९:२, मत्ती ४:१०) अकेले और दूसरे शीष्यों के साथ मिलकर (प्रेरित २:४२–४६, ५:१२, २०:७, १कुरू.१४:२६, १६:२, कुलु.३:१६, इब्री. १०:२३–२५)

३. देह की सगंती में उपस्थित रहने की आदत डालूँगा/डालूँगी। (इब्री. १०:२३–२५),

४. मनुष्यों का मछुवारा बनूँगा/बनूँगी। (मरकुस १:१७)

५. मसीह के देह की एकता की रक्षा करूँगा/करूँगी (१कुरू. १:१०, १२:२२–२६, इफि. ४:१–३, फिलि. २:१–४),

६. परमेश्वर के वचन पढ़ूँगा/पढ़ूँगी और याद करूँगा/करूँगी (भ.सं.१:१–३, ११९:११, २तिमु. २:१५)

७. सूचनाओं और सुधारों को गम्भीरता से स्वीकार करूँगा/करूँगी (याने मार्गदर्शन लेना) (नी.व. १:२–५, ९:७–९, ११:४, १६:२०, १९:२०, इब्री. १२:५, कुलु. ३:१६, रोमियों १५:१४),

८. दूसरों के लिये उदाहरण बनूगाँ/बनूँगी (मत्ती ५:१६, १कुरू. ११:१, १तिमु. ४:१२),

९. दूसरों को सुधारने में कोमलता से व्यवहार करूँगा/करूँगी। (गल.६:१, २तिमु. २:२४–२६) जो पाप में पड़े हैं उन्हें प्रभु के पास और औरों के पास लौटा लाऊँगा ताकि वह मसीह के देह के लिये उपयोगी ठहरें। (मत्ती १८:१५–२०, लूका १७:३–४, रोमियों १५:१४, गल. ६:१–५),

१०. इम्मानदार और सच्चा रहूँगा/रहूँगी (इफि. ४:१५, २५) और दूसरों की उन्नति हो ऐसा

बोलूँगा/बोलूँगी (इफि. ४:२९, कुलु. ४:६) और श्राप के बदले आशीष दूँगा/दूँगी। (रोमियों १२:४, १ पतरस ३:८–९)

११. शान्ती दूत बनुँगा/बनुँगी और दुसरों के साथ शान्ती से रहूँगा/रहूँगी (मत्ती ५:९, रोमियों १२:१८) और जिसको भी मुझसे कुछ शिकायत है उससे मेल–मिलाप करूँगा/करूँगी। (मत्ती ५:२३–२४)

१२. अपने आपका इन्कार कर दूसरों को अपने से बेहतर जानूँगा/जानूँगी (लूका ९:२३–२५, फिली. २:३–८), और मसीह जैसे उनकी सेवा करूँगा/करूँगी। (मत्ती २०:२६–२८, यूहन्ना १३:१२–१७, इफि. ६:७–८)

१३. मेरा काम स्वयं करूँगा/करूँगी और पूरे मन से करूँगा/करूँगी जैसे प्रभु के लिये कर रहा/रही हूँ (कुलु. ३:२३–२४, १थिस्स. ४:११–१२, २थिस्स. ३:१०–१२)

१४. संयम और अनुशासन का पालन करूँगा/करूँगी (२कुरू. ५:१४–१५, गल. ५:२३, १तिमु ४:७–८)

१५. जिसने भी मेरे विरूद्ध पाप किया है उसे या जो भी मुझसे क्षमा माँगे उसे (प्रभु के साम्हने)पूरे मन से क्षमा करने के लिये तैयार रहूँगा/रहूँगी। (मत्ती १८:२१–२२, ३५ मरकुस ११:२५–२६, लूका १७:३–४)

१६. मेरे हर एक रिश्ते में पवित्र शास्त्रिय प्रेम का उपयोग करूँगा/करूँगी (मत्ती ५:४४, यूहन्ना १३:३३–३४, १३:८,१०, १कुरू.१३:४–८, इफि. ५:२५, तीतुस २:२–४)

१७. सिर्फ उसीसे विवाह करूँगा/करूँगी जो प्रभु से रिश्ता रखता/रखती (१कुरू. ७:३९)

१८. मेरी देह से परमेश्वर का सम्मान करूँगा/करूँगी। (१कुरू. ६:१९–२०)

१९. मैं अपने आपको बैर–भाव, छल, कपट, डाह और हर प्रकार की बदनामी, झगड़ा, डाह, क्रोध, विरोध, ईर्ष्या, चुगली, अभीमान, बखेड़े, लड़ाई–झगड़े, निन्दा की बातें, बुरे–बुरे शक, सन्देह, व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तीपूजा, टोना, बैर, फूट, विधर्म, मतवालापन, लीला–क्रिड़ा इन समान और भी काम, बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रिगमन, लोभ, दुष्टता, कुदृष्टि और मूर्खता, पुरूषगामी, अन्धेर, असंयम, निर्लज्ञता, मूढ़ता की बातें, गन्दे हंसी मजाक (चुटकुले), दुष्कामना, गालियाँ और झूठ इन सब बातों से दूर रखूँगा/रखूँगी। (१पतरस २:१, २कुरू.१२:२०, १तिमु. ६:४, गल. ५:१९–२०, मरकुस ७:२१–२२, १कुरू. ६:९–१०, मत्ती २३:२३,इफि ५:४, कुलु. ३:५–९)

२०. मेरे पाप परमेश्वर और दूसरे शीष्यों के सामने कबूल करूँगा/करूँगी। (याकूब ५:१६, १यूहन्ना १:९, गीनती ५:५–७, भ.सं. ३२:३–५),

२१. मेरी कमाई का एक हिस्सा (दशमांश) अलग जमा कर उसे खुशी से परमेश्वर के काम के लिये दूँगा/दूँगी (१कुरू. १६:२, २कुरु.९:६–१२),

२२. जरूरतमन्द के साथ बाटूँगा/बाटूँगी । (इफि. ४:२८, १तिमु. ६:१७–१९, याकूब २:१५–१६),

२३. मेरी योग्यताओं, प्रतिभाओं और धार्मिक वरदान का उपयोग परमेश्वर और कलिसीया की बढ़ौतरी के लिये करूँगा/करूँगी। (मत्ती २५:१४–३०, रोमियों १२:३–८, १कुरू १२:७ , इफि ४:११–१२, १५–१६, १पतरस ४:१०–११ पर आधारित),

२४. अपने अगुवों की बात मानूँगा/मानूँगी और उनके अधीन रहूँगा/रहूँगी ताकि उनका काम बोझ नही पर आनन्ददायी बने। (इब्री. १३:१७), और

२५. परीक्षाओं में भी सदा आनन्दित रहूँगा/रहूँगी। (फिली. ४:४, १थिस्स ५:१६, याकूब १:२–४)

एक विश्वासी पती होने के नाते मैं:

१. जैसे मसीह ने कलिसीया से प्रेम किया वैसा प्रेम मैं अपनी पत्नी से करूँगा। (इफि ५:२५–३३)

२. अपनी पत्नी के साथ समझदारी से रहूँगा (१पतरस ३:७) और

३. मेरे परिवार की जरूरतों को पूरा करूँगा (१तिमु. ५:८)

एक विश्वासी पत्नी होने के नाते मैं:

१. मैं अपने पती के लिये एक सही (योग्य) सहायक बनूँगी। (उत्पति २:१८)

२. मेरे पती का आदर करूँगी, प्रेम करूँगी और उसके अधीन रहूँगी। (इफी. ५:२२–२४,३१,३३, तीतुस २:४–५, १पतरस ३:१–६), और

३. मेरे परीवार की जरूरतों का ध्यान रखूँगी। (नि.व.३१:१०–२७, १तिमु. ५:१४, तीतुस २:५)

एक विश्वासी पती/पत्नी होने के नाते हम:

१. एक दूसरे के अधीन रहेंगे (इफि ५:२१) और

२. एक दूसरे के रिश्ते में एकता बनाए रखेंगे। (उत्पति २:२२–२४, मत्ती १९:४–६, इफि ५:३१)।

एक विश्वासी माता–पिता होने के नाते हम:

१. अपने बच्चों को प्रेमपूर्वक शिक्षण, अनुशासन और उदाहरण द्वारा सिखाएंगे (व्य.वि.६:६–९, इफि.६:४, तीतुस २:४)। और

२. अपने बच्चों को उकसाएंगे नही (इफि ६:४)।

एक विश्वासी बच्चा होने के नाते मैं:

१. अपने माता पिता के अधीन रहते हुए उनकी शिक्षाओं को मानूगाँ। (इफि ६:१)

२. अपने माता पिता का आदर करूँगा। (निर्गमन २०:१२, व्य.वि. ५:१६ इफि. ६:२), और

३. अपने माता–पिता की शिक्षाओं को गम्भीरता से सुनूगाँ और याद रखूँगा। (नि.व. १:८–९)

एक विश्वासी नौकर होने के नाते मैं:

१. मेरे मालिक के प्रति आज्ञाकारी और उनके अधीन रहूँगा/रहूँगी। (इफि. ६:५–८, कुलु ३:२२, १ तिमु ६:१–२, तीतुस २:९, १पतरस २:१८ पर आधारित)।

२. मेरे मालिक का आदर करूँगा। करूँगी। (१तिमु ६:१–२), और

३. अपने मालिक के साथ सारे व्यवहारों में आदरपूर्ण रहूँगा / रहूँगी। (१ तिमु ६:२, तीतुस २:१०)

एक विश्वासी मालिक होने के नाते मैं:

१. मेरे नौकरों के प्रति शिष्टतापूर्ण और न्यायपूर्ण बर्ताव करूँगा/करूँगी। (कुलु ४:१) और

२. मेरे नौकरों को धमकाना छोड़ दूँगा/दूँगी। (इफि ६:९)

वचनों द्वारा शिक्षित मीनीस्ट्री का अगुवा होने के नाते में :

१. मुझ पर किये विश्वास में खरा उतरूँगा/उतरूँगी (१तिमु ३:१–१५, तीतुस १:६–९, २:७–८, १ पतरस ५:१–३ पर आधारित) दूसरों को मार्गदर्शन करूँगा/करूँगी, ताकि वो भी दूसरों को सिखा सकें (२ तिमु २:२) और

२. दूसरों को सुधारने (चिताने, शिक्षा देने) में कोमलतासे काम लूँगा/लूँगी, हमेशा इस बात को ध्यान में रखते हुए कि उन्हे फिर से प्रभु के पास लाऊँ। (मती १८:१५–२०, गल ६:१–२, २ तिमु २:२४–२६ पर आधारित)।